ककड़ी के चोरों को फाँसी

(लम्बी तेवरी–तेवर शतक)



रमेशराज

ककड़ी के चोरों को फाँसी
प्रचलित लोककथनों पर आधारित-
लम्बी तेवरी (तेवर-शतक)

तेवरीकार-रमेशराज

प्रथम संस्करण-2012, मूल्य-40 रुपये, सर्वाधिकार-लेखकाधीन
सार्थक-सृजन प्रकाशन, 15/109, **ईसानगर,**
निकट-थाना सासनी गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)
मोबा.- 09634551630

परिचय


रमेशराज

पूरा नाम-रमेशचन्द्र गुप्ता
जन्म-15 मार्च 1954, गांव-एसी, अलीगढ़
शिक्षा-एम.ए. हिन्दी, एम.ए. भूगोल
सम्पादन-तेवरीपक्ष (त्रैमा.)
सम्पादित कृतियां 1. अभी जुबां कटी नहीं (तेवरी-संग्रह) 2. कबीर ज़िन्दा है (तेवरी-संग्रह) 3. इतिहास घायल है (तेवरी-संग्रह) 5-एक प्रहार: लगातार (तेवरी संग्रह)
स्वरचित कृतियां- रस से संबंधित-1. तेवरी में रससमस्या और समाधान 2-विचार और रस (विवेचनात्मक निबंध) 3-विरोध -रस 4. काव्य की आत्मा और आत्मीयकरण
तेवर-शतक-लम्बी तेवरियां-1. दे लंका में आग 2. जै कन्हैयालाल की 3. घड़ा पाप का भर रहा 4. मन के घाव नये न ये 5. धन का मद गदगद करे 6. ककड़ी के चोरों को फांसी 7.मेरा हाल सोडियम-सा है 8. रावण-कुल के लोग 9. अन्तर आह अनंत अति 10. पूछ न कबिरा जग का हाल
शतक-1.ऊघौ कहियो जाय (तेवरी-शतक) 2. मधु-सा ला (अष्ठपदी शतक) 3.जो गोपी मधु बन गयीं (दोहा-शतक) 4. देअर इज ए ऑलपिन (दोहा-शतक) 5.नदिया पार हिंडोलना (दोहा-शतक) 6.पूजता अब छल (हाइकु-शतक)
मुक्तछंद कविता-संग्रह-1. दीदी तुम नदी हो 2. वह यानी मोहन स्वरूप **बाल-कविताएं**- 1.राष्ट्रीय बाल कविताएं
प्रसारण-आकाशवाणी मथुरा व आगरा से काव्य-पाठ
सम्मानोपाधि-'उ.प्र. गौरव', 'तेवरी-तापस', 'शिखरश्री'
अभिनंदन-सुर साहित्य संगम (एटा), शिखर सामाजिक साहित्कि संस्था अलीगढ़
पूर्व अध्यक्ष-राष्ट्रीय एकीकरण परिषद, उ.प्र.शासन,अलीगढ़ इकाई
सम्प्रति-'दैनिक जागरण' से स्वतंत्र पत्रकार के रूप में सम्बद्ध
सम्पर्क-15/109,ईसानगर,निकट-थाना सासनीगेट,अलीगढ़,उ.प्र.
मोबा. 09634551630

ककड़ी के चोरों को फाँसी

प्रचलित लोककथनों पर आधारित-

लम्बी तेवरी (तेवर-शतक)

रमेशराज

हर तेवर 'लोकोक्ति' सुहाये, शब्दों के भीतर तूफान
अपने घर को फूंक तमाशा हुए देखने हम तैयार। १

दही जमेगा, घी निकलेगा, जब ले लेगा दूध उफान
लिये बाल्टी 'लोककथन' की काढ़ें हम गइया की धार। २

भानुमती का जैसे कुनबा चना मटर सँग गेंहू धान
कुछ चुन, कुछ गढ़ 'नयी कहावत' 'तेवर-शतक' किया तैयार।३

'फैलुन-फैलुन फा' के बदले हम लाये 'आल्हा की तान'
हर तेवर दो-दो तुकांत-कम जिनमें दिखे दुधारी मार। ४

क्रन्दन को कहना आलिंगन होगा लोगों को आसान
उसे ग़ज़ल हम कैसे कह दें जिससे भालों की बौछार। ५

निकले सर पर कफन बाँधकर फौलादी सीने को तान
लिख पाये इसलिए तेवरी अपने 'सोचों' में अंगार। ६

मुँह गाली देता है लेकिन थप्पड़ खाय विचारा कान
कोई पापी दण्ड किसी को, माँ कपूत का भरे उधार। ७

हम कोल्हू के बैल सरीखे लिये अमिट अब पांव थकान
खुर टूटे अरु दांत गिरे सब, कंधे बोझे को लाचार। ८

अन्ना जैसे ब्रह्मचारियों का अनशन से बढ़ता मान
लालू सौ बच्चों का भालू क्या समझेगा इसका सार। ९

काले अक्षर भैंस बराबर जुटे साक्षरता अभियान
मंत्री बनकर मार रहे हैं पढ़े-लिखों को जूते चार। १०

हम महान हैं इसीलिए तो अपनी है हर बहस महान
हम कर रहे ब्याह से पहले यारो गौने पर तकरार। ११

खुद को नहीं सिर्फ औरों को अपने हैं सारे व्याख्यान
नाइन पाँव सभी के धोती खुद के पाँव मैल-अम्बार। १२

तर्कहीन बहसों के बदले ज्ञानी से बस पाओ ज्ञान
किसी तरह से भला नहीं है चलते बैल मारना आर। १३

सौ-सौ चूहे खाय बिलइया अब चाहे गंगा-स्नान
अब हर एक एक लुटेरे पर है 'दानवीर' का भूत सवार। १४

करे न रक्षा वो औरों की थर-थर जिसके काँपें प्रान
चून माँगकर पेट भरे जो वो क्या भात भरेगा यार। १५

उल्टे चलन जगत के देखे नीरस मिले आज रसखान
भरे समन्दर घोंघा प्यासा, प्रेम-बीच पसरी तकरार। १६

हम सुख को सुख तब ही मानें अधरों तक आये मुस्कान
माह न जाड़ा, पूस न जाड़ा, तब जाड़ा जब शीत बयार। १७

घुटना घुटने को झुकता है, दयावान को ही दुःख-ज्ञान
घर आये बेटे की मइया आँत टोहती नजर उतार। १८

अभी न दाँत दूध के टूटे, बेटा सबके काटे कान
बचपन में ही दीख रहे हैं सुत के पाँव महल के पार। १९

पढ़े-लिखे को कहा फारसी, क्या पण्डित को ज्योतिष-ज्ञान?
पैनी तो पत्थर में पैनी, क्या तैरा को नदिया-पार। २०

लोग हँसें रख हाथ मुखों पर नंगे के सुनकर व्याख्यान
फाँके सतुआ लेकिन बोले 'मथुरा में करना भण्डार'। २१

सबको राह बताते फिरते जो हैं राहों से अन्जान
कूँए के मेंढ़क समझाते मिले हमें सागर का सार। २२

पाँवों में जब काँटे टूटे तो आया जूतों का ध्यान
आग लगी तो कुआ खोदने झटपट दौड़ा यह संसार। २३

घर के भीतर धम्मक-धम्मा मीयाँ-बीबी कठिन निभान
धरी लुगइया कभी न करियो, करियो ठीक-ठिकानेदार। २४

अपना खाना और कमाना, अपनी ढपली-अपनी तान
अपने ही रँग रँगे हुए सब, अब समूह का त्याग विचार। २५

टूटी दाढ़ बुढ़ापा आया, टाँग कापतीं, बहरे कान
गये जवानी फीका लगता सारा का सारा संसार। २६

नंग चोर छिनरा ज्वानी के करें बुढ़ापे ईश्वर-ध्यान
सारे पाजी बनते काजी वृद्ध अवस्था सोच-विचार। २७

पाँव न जानें कान पकड़ना, पकड़ें सदा हाथ ही कान
काँटे को झट सुई निकाले, हाथ न ली जाये तलवार। २८

नोटों भरी अटैची यारो देख विहँसता पुष्प समान
नेता हो पानी से पतला हर दल बहने को तैयार। ३०

नयी आर्थिक नीति अजब है मरुथल दिखे पुष्प-उद्यान
बिन बादल के कौंधे बिजली, आसमान से गिरे फुहार। ३१

जयचंदों ने करीं बधिक की सारी तरकीबें आसान
चिड़ियाएँ दाने को देखें, नहीं जाल पर करें विचार। ३२

मंत्री बचे, लुटे सब जनता, रखे पुलिस बस इतना ध्यान
खड़े देखते ट्रेन-डकैती गार्ड सिपाही थानेदार। ३३

बलशाली को अति बलशाली पल में दिखता बाप समान
देख शिकारी फौरन भागे, कुंजर-जंगल का सरदार। ३४

केवल अधिकारों की बातें खुदगर्जी इस युग की शान
खाने को तो शेर सरीखे और कमाने अजगरदार। ३५

दुःखी नाक की पीर न पूछें होकर नाक पड़ोसी कान
सने हुए हाथों के यारो पाँव बने कब धोबनहार। ३६

लुटें गोपियाँ उसके सम्मुख वो ही अर्जुन वही कमान
समय-समय के फेर बाज पै झपट करे है बगुला वार। ३७

राजनीति में नकटे-बूचे लुच्चे-छिनरे नंग महान
देखा जिन्हें चाटते तलुवे, बने फिरें वे अति खुद्दार। ३८

साथ भला कुण्डी-किबाड़ का, ज्ञानी के सँग बुद्धि महान
विष ही घोलेगा जीवन में यारो मधुशाला का यार। ३९

औरों के धन को डकारकर ऐंठे उजले भृकुटी तान
उजलों से कंजरिया अच्छी लौटा देती लिया उधार। ४०

खाते वाले चलन न होते करुणा और दया की खान
बिन मतलब के चिरी अँगुरिया क्यों कर मूतन लगा सुनार। ४१

हर पल वाद-विवाद मिलेगा भौंड़े राग-बेसुरी तान
जिस घर भी हों तेरह चूल्हे, नहीं मिलेगा उस घर प्यार। ४२

यही सोच शोषण जनता का नेता करता सरल विधान
नीबू और आम के मसके फूट पड़े पल में रस-धार। ४३

देख दरोगा पूरा तोले दाँत निपोरि सभी समान
वही कहावत पुनः सिद्ध है-'बनिया होय दबे का यार'। ४४

हम महान हैं तभी हमारे होते सारे प्रश्न महान
बाल कटाते पूछ रहे हैं-'सर के ऊपर कितने बार'। ४५

हल्का करने हेतु काम को जगह-जगह बाँटें विद्वान
सर पर बोझ, पिराये गर्दन, कंधों पर लो उसे उतार। ४६

बहरा कहे सुनायी देता, अंधा जग का करे बखान
राग-ताल जो गीत न जाने, घूम रहा है लिये सितार। ४७

न्योते बामन खायें नाऊ छूता फिरे पाँव जिजमान
ऐरे-गैरे लोग श्राद्ध में ले आया पण्डित मक्कार। ४८

माँ तो मरे धीय को निश-दिन, मरती धीय धींगरा-शान
और उदार बाप के घर में लूट-निपुण है पुत्र अपार। ४९

साधु उसे परसाद थमाये जो थाली में डाले दान
अंधा बाँटे रहा रेवड़ियाँ अपनों को दे बारम्बार। ५०

पागल होकर मति का अन्धा आँख सहारे ढूंढ़े कान
नगर ढिंढोरा कंधे छोरा सूझे नहीं सही उपचार। ५१

समझदार उसको ही मानो करता युक्ति राह आसान
पल-पल हुक्का पीने वाला गाड़े भूभर में अंगार। ५२

कर अपमान खिलाये खाना रख आगे पूड़ी पकवान
गूलर के फल भीतर भुनगा इसका मीठापन बेकार। ५३

मूरख करता रोज कमायी खाते जिसको चतुर सुजान
संग चूतिया यूँ ही डोलें चंट शिकारी करे शिकार। ५४

साधु चलायें चकलाघर अब, योगी को है भोग महान
जेठ संग भागे द्यौरानी आज हुआ ऐसा संसार। ५५

मन पर दुःख का यदि साया हो तो मुख से गायब मुस्कान
सर के ऊपर बोझ रखो तो पहुँचे तुरत पाँव तक भार। ५६

बढ़े हुए नाखून, बाल दाढ़ी के होते बोझ समान
इन्हें काटना ही चतुराई, बढ़ी मूँछ का कर सत्कार। ५७

बूट पहनकर राह चलो तो काँटे करें राह आसान
केवल भगतसिंह की भाषा सुनती है बहरी सरकार। ५८

क्रान्तिकारियों की तलवारें फिर से करें रक्त-स्नान
'तिलक' सुभाष सरीखे नेता फिर भारत में हों तैयार। ५९

बेटी माँगे महल-दुमहले, कूटे बाप गैर के धान
माँ तो पीसत-पीसत हारी, पूत बने है साहूकार। ६०

उल्टी दिशा पालकी जानी, गलत नहीं यारो अनुमान
छिनरे नेताओं के कंधे जनता की डोली का भार। ६१

मन-मन भाये मूड़ हिलाये देख समोसा या मिष्ठान
बिन चुपड़ी रोटी रखवाये, खा रसगुल्ला दिल-बीमार। ६२

नेता रोये बिन कुर्सी के, वैश्या रोइ बुढ़ापा जान
रोइ सियासत बिन शकुनी के, खेती रोये बिन जलधार। ६३

टंगी मार बढ़े आगे जो उसको भी न राह आसान
खाई खोदे जो औरों को उसको कूप मिले तैयार। ६४

ढोंगी के भाड़े के टट्टू घोषित करते फिरें महान
बिन परमारथ बिना ज्ञान के नकली संत आज तैयार। ६५

गद्दी उतरे नेताजी का काग-कूकरे जैसा मान
चार दिनों की रहे चाँदनी फिर छाये जीवन अँधियार। ६६

हों बलहीन नियति के आगे अच्छे से अच्छे बलवान
शेर, भेड़िया, हाथी, मानुष सब झेंलें मच्छर की मार। ६७

नेता सत्ता रहते फूफा चमचों के सँग चढ़े विमान
सत्ता के जाते ही उससे आँख चुरायें तावेदार। ६८

तब तक ही कुहराम नहीं है रखी हुई है जब तक म्यान
अगर खोल से बाहर निकली चमक उठेगी झट तलवार। ६९

पढ़कर अमरीका आये हो भेद-भाव पर अब भी ध्यान!
पानी पीकर जाति पूछना अब तो छोड़ो मेरे यार। ७०

क्षत्री वो जो करे निछावर निर्बल के हित अपने प्रान
जो क्षत्री हो रण से भागे उसके जीवन को धिक्कार। ७१

जिस घर बाप शराबी होगा सुत भी करे सुरा का पान
चूहे जाए मिट्टी खोदें मान लीजिए आखिरकार। ७२

थोथे वर्ण-जाति पर करता मूरख तू किसलिए गुमान
सब ही बने चाम के इस जग, सबकी भइया जाति चमार। ७३

अपनी-अपनी जड़ें त्यागना कभी नहीं होगा आसान
रोटी-बेटी जाति बीच ही सब देते हैं विविध प्रकार। ७४

युद्ध और व्यवसाय रहे हैं किस युग यारो एक विधान?
वणिक-पुत्र के हाथ न शोभित होते तीर और तलवार। ७५

केवल काँव-काँव ही बोलें, काँव-काँव जिनको आसान
काग पींजरे पढ़ वेदों को कैसे लेंगे बुद्धि सुधार। ७६

दूध मलाई चट कर जाये चढ़ि कुर्सी सत्ता का श्वान
नोच रही बिल्ली-सी जनता खम्बे को होकर लाचार। ७७

समझदार घर रार न पाले लखि तिय को लाये मुस्कान
घर की खाँड़ किरकिरी लागे गुड़ पड़ोस में चखें गँवार। ७८

एक अपाहिज लोकपाल को लाने पर इन सबका ध्यान
गूगों के मुखिया बहरे हैं, अन्धों के काने सरदार। ७९

अपने हाथ खुरपिया भारी राह चलत में देति थकान
पर-कंधे पै रखा फावड़ा लगे बीजना के सम भार। ८०

पीये छाछ मारकर फूकें दूधजले की यह पहचान
रस्सी देखि सांप का काटा करता भारी चीख-पुकार। ८१

जने-जने का मनुआ राखत वैश्या है अब बाँझ समान
हास-दान देने वाले के नैनों मिले अश्रु की धार। ८२

लोकतंत्र में बने हुए हैं अंधे सब कानून महान
चित भी इसकी पट भी इसकी, सब कहते इसको सरकार। ८३

जितकी ब्यार उतई बरसाऔ गेंहू ज्वार बाजरा धान
पत्थर में कूआ के खोदे कब मिलती पानी की धार। ८४

कालेधन का करे आकलन अफसर बैठि बीच दालान
मंत्री के सुत बता रहे हैं सोलह चौके होते चार। ८५

सज्जन पास बैठकर आता मन उदारता-भरा विधान
पानी पीजे छनि-छानि के, गुरु बनाइये सोच-विचार। ८६

लोग देखते खड़े तमाशा, बढ़े न कोई मुट्ठी तान
निबलहिं अगर धींगरा मारै रोबन देई नहीं मक्कार। ८७

गूँगे-बहरे करें सभाएँ अहंकार जिनमें अभिमान
नकटे-बूचे सबसे ऊँचे दें सज्जन की लाज उतार। ८८

नाम वसंत किन्तु है पतझर, जल के भीतर रेगिस्तान
बस बाहर की चमक-दमक है, बेर रखे गुठली का भार। ८९

बाप बिना क्या बेटी शादी, माँ बिन पले नहीं सन्तान
भइया बिना सनूना सूना, बिना धार चाकू बेकार। ९०

तीन लोक से लीला न्यारी रोम जले 'नीरो' अन्जान
मस्तराम मस्ती में बस्ती फुँकी देख खुश होत अपार। ९१

भूल टैंट अपने नैनों के काना देख अधर मुस्कान
आसमान पर थक रहे हैं सब के सब बौने किरदार। ९२

खुद को कहे सती-सावित्री नगर-वधू-सा जिसका मान
उछल रही है चलनी जिसके भीतर देखे छेद हजार। ९३

आगे कूबर पीछे कूबर पर बाजे सुन्दर धनवान
मैराथन दौड़ों में देखा लूले-लँगड़ों का सत्कार। ९४

तीन बुलाये तेरह आये सब का रसगुल्लों पर ध्यान
टेड़ा बहुत निभाना दावत घड़ा चीकने रिश्तेदार। ९५

उनका करे क्रोध भी मंगल जो होते हैं साधु-समान
बादल गरजे, दामिनि दमके, किन्तु करे जल की बौछार। ९६

बनता सिलकर तन की शोभा, कैंची से कुछ कटकर थान
सन सड़कर रस्सी बन जाता, बाती जल करती उजियार। ९७

पानी लाओ चाय पिलाओ और रखो आगे मिष्ठान
कौन नहीं अफसर खुश होता इस युग लखि नोटों में भार। ९८

बूँद-बूँद से घड़ा भरे है, पल-पल बढ़ते हो उत्थान
रत्ती-रत्ती के जोड़े से इक दिन बँधता हाथी द्वार। ९९

मजबूरी का नाम शुक्रिया अच्छी लगे बेसुरी तान
पतरी-मोटी कौन देखता मक्का की रोटी को यार। १००

कूआ से घर तक जाना भी भरि मटका है अति कष्ट समान
गंजी पनिहारिन के सर पर रखी ईंडुरी काँटेदार। १०१

दाँत न देखो उस गइया के जिसको किया गया हो दान
झट सौ बार परखिए लेकिन आयीं तोपें शस्त्रागार। १०२

कपड़े की दूकान कोयला-राख बेचना कब आसान
साथ-साथ कब होता यारो इत्र-हींग का कारोबार। १०३

चोरों से घर की रखवाली करवाना मूरखपन मान
छोड़ा जाय चटोरी कुतिया बूते नहीं जलेबी-थार। १०४

एक पंथ दो काज बनावै होती वो हर चीज महान
रई न केवल छाछ निकारे घी को भी सँग देति निकार। १०५

फटे दूध के बीच जमामन डाल दही मिलता नहिं मान
तेल नहीं बालू से निकले मथो भले ही सौ-सौ बार। १०६

कंड़ा-पाथन भाग गयी झट घर में आये जब मेहमान
चाय कराह-कराह बनायें घर में मीयाँ तावेदार। १०७

ककड़ी के चोरों को फाँसी, देशद्रोहियो का सम्मान
'सत्यमेव जयते' के नारे लिख-लिख मगन होय सरकार। १०८

पेटू मरे पेट की खातिर, नामी देतु नाम पर जान
धरती ऊसर चाहे सूखा, संत चाहता सुख संसार। १०९

भूख को रोटी की चाहत, नेता चाहे सत्ता-शान
धूप माँगता है खरबूजा, माँगे आम मेह की धार। ११०

बना दिया माहौल सभी ने नयी बहू को नर्क समान
ननद-जिठानी चरें मखाने, जच्चारानी पतली दार। १११

नंग किराये पर रहता है किन्तु महल का करे बखान
बिना चून के सौ-सौ रोटी ऐसे होती हैं तैयार। ११२

एक-एक मिल होते ग्यारह, सभी काम होते आसान
एक हाथ से बँधे न पगड़ी, एक हाथ ताली नहिं यार। ११३

सड़क नहीं कमरे आलिंगन होता नैतिक, पाता मान
नाक दिखे आंखों का काजल तो देता है मन को भार। ११४

घोड़े से गिर शान न जाती, नजर गिरे से जाती शान
जो सर देता सच की खातिर, माना जाता वह सरदार। ११५

कायर राजा-रक्षा मंत्री क्या कूटेंगे पाकिस्तान
बिन आदेश मुल्क पै भारी सेना के अच्छे हथियार। ११६

रस-परम्परा में एक नये रस की खोज

विरोध-रस

शोधकर्त्ता-रमेशराज, कृतिमूल्य-सौ रुपये

विरोध-रस क्या है?

जब किसी आश्रय में तिरस्कारादि के कारण स्थायी भाव, 'आक्रोश' जाग्रत होता है तो वह आलंबनों के प्रति केवल असहमति ही व्यक्त नहीं करता, बल्कि उसके अनुभावों में धिक्कारना, अपशब्द बोलना, निंदा करना स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है, जो अन्ततः विरोध-रस की निष्पत्ति का सूचक है।

'विरोध-रस' विद्वानों की दृष्टि में-

कुछ भाव तो ऐसे हैं कि आलंबन बदल जाने से वे स्वतः स्वतंत्र रूप धारण कर लेते हैं। 'प्रेम' ऐसा ही मानो सत्य है। कुछ संचारी भी इतने सशक्त हो जाते हैं कि रस का परिपाक हो जाता है। परम्परत रूप से आपके द्वारा प्रवत्त **'विरोध-रस'** रौद्र रस के अन्तर्गत आता है, परन्तु वह विरोध जिसमें व्यवस्था के प्रति अथवा किसी सामाजिक बुराई के प्रति गुस्सा या 'आक्रोश' होता है, वह व्यक्तिगत क्रोध से सर्वथा भिन्न है।... आपकी स्थापना से एक स्पष्ट मार्ग प्रशस्त होता है। -**डॉ. परमलाल गुप्त**

'विरोध-रस' पर सार्थक चर्चा चल रही है। अनवरत प्रयास निकट भविष्य में रंग दिखायेगा।-**डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'**

'विरोध-रस' पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए।... इससे साहित्य की परंपरा विकसित होगी -**डॉ. हरेराम पाठक**

'विरोध-रस'- खूब! आपके कार्य शोधपरक। -**अशोक अंजुम**

'विरोध-रस' के 'अनुभाव', 'विभाव', 'संचारी भाव' पर शोधपरक लेख पठनीय।-**डॉ. शारदा प्रसाद 'सुमन'**

'विरोध-रस' पर सामग्री उत्तम। -**डॉ. गणेशदत्त सारस्वत**

'विरोध'शास्त्रीय दृष्टि से रस ही है।-**डॉ. नटवर नागर**

विरोध-रस शोधपरक। -**डॉ. ज्ञानवती दीक्षित**

'विरोध-रस' की नयी अवधारणा और उसके विविध शास्त्रीय पक्षों की व्याख्या उत्साहवर्द्धक। आपका यह प्रयास हिन्दी जगत की सामयिक हलचलों में सम्मिलित किया जाना चाहिए। -**कृष्णकांत 'एकलव्य'**

शोधार्थियों के लिये एक महत्वपूर्ण पुस्तक

विचार और रस

(रस-निष्पत्ति का वैचारिक विवेचन)

लेखक-रमेशराज

राष्ट्रीय बाल कविताएँ

कवि-रमेशराज

प्राप्ति स्थल-बजरंग प्रकाशन, सागरपुर, दिल्ली

महत्वपूर्ण तेवरी संग्रह

(१) अभी जुबां कटी नहीं	संपादक-रमेशराज
(२) कबीर ज़िन्दा है	संपादक-रमेशराज
(३) इतिहास घायल है	संपादक-रमेशराज
(४) एक प्रहारः लगातार	तेवरीकार-दर्शन बेज़ार
(५) देश खण्डित हो न जाए	तेवरीकार-दर्शन बेज़ार
(६) ये ज़ंजीरें कब टूटेंगी	तेवरीकार- दर्शन बेज़ार

सार्थक-सृजन, १५-१०९, ईसानगर,
निकट-थाना सासनीगेट, अलीगढ़